ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

KEY WORDS: हितग्राही, विपणन प्रकिया, ककून, संग्रहणकर्ता

छततीसगढ़ राज्य के कोसा उद्योग का विपणन प्रकिया में इंटरनेट के बढ़ते कदम

डॉ. मोना चौहान सहायक प्राध्यापक वाणिज्य विभाग शासकीय काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय अभनपुर (छ0ग0)

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर उद्योग धंधों के विकास हेतु इंटरनेट एक आवश्यक उपकरण बन गया है। अब (व्यापारी) उद्यमी को अपने माल के विक्रय के लिये स्थान–स्थान जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि वह एक ही स्थान से ऑनलाईन व्यापार का संचालन कर सकता है इसमें व्यापार हेतु कच्चे माल का क्रय, विपणन क्रियाए, विक्रय उपरांत सेवा, भुगतान सेवा सभी शामिल है। छत्तीसगढ़ राज्य के कोसा उद्योग के विपणन एवं विक्रय क्रियाओं में इंटरनेट आधारित उपरोक्त व्यापारिक क्रियाओं का उपयोग कर इसे और अधिक विकसित किया जा सकता है।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर उद्योग धंधों के विकास हेतु इंटरनेट एक आवश्यक उपकरण बन गया है ई–कॉमर्स एवं ई–बैंकिंग के प्रयोग ने सम्पूर्ण विश्व के व्यापार को एक सूत्र में बांध दिया है इसके माध्यम से हम छोटी से छोटी व बड़ी से बड़ी वस्तुओं का क्रय–विक्रय एक ही स्थान से आसानी से कर सकते हैं। ''विभिन्न व्यापारिक सहयोगियों कम्पनियों, ग्राहकों, उपभोक्ताओं आदि के साथ व्यापारिक सूचनाओं का आदान–प्रदान उन्नत सूचना औद्योगिकी व कम्प्यूटर नेटवर्कों की सहायता से और इलेक्ट्रानिक माध्यम से सम्पन्न करना ई–कॉमर्स कहलाता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बाजार के बदलते स्वरूप के कारण उचित बाजार व्यवस्था के बिना किसी भी व्यापार का टिक पाना मुश्किल है। बाजार के इस बदलते परिदृश्य में यह आवश्यक हो गया है कि कोसा उद्योग भी ई–कॉमर्स को स्वीकार करें अभी व्यवसाय के प्रत्येक क्षेत्र में ई–कॉमर्स को प्राथमिकता दी जा रहीं है। क्योंकि इसकी सहायता से सभी व्यवसायी अपने व्यापार को विश्व स्तर पर फैला सकते है।

छततीसगढ राज्य का कोसा उद्योग –

कोसा उद्योग प्राचीन परम्परागत उद्योग है इसमें कम पूंजी निवेश, सरल उत्पादन तकनीक, श्रम एवं प्रबंधन के सही समन्वय से बड़े स्तर पर रोजगार उपलब्ध करा पाने की क्षमता है। यह उद्योग न केवल लोगों की वस्त्र की आवश्यकता की पूर्ति कर वृहद पैमाने पर रोजगार उपलब्ध कराता है, बल्कि भारतीय कला, संस्कृति और विरासत को भी अभिव्यक्त करता है। इसी कारण देश के विभिन्न प्रांतों में कोसा उद्योग अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति कर रहा है। प्रदेश में रेशम गतिविधियों से ग्रामीण अंचल में निवास करने वाले अनुसूचित जाति जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले हितग्राही, अंशकालीन रोजगार के साधन स्थानीय स्तर पर प्राप्त कर अपनी आय में वृद्धि कर रहे है। छत्तीसगढ़ में रायगढ़ चांपा एवं बिलासपुर तथा बस्तर जिलो के वनों में कोसा फल प्राकृतिक रूप से बहुतायत में उपलब्ध है। यहां प्राकृतिक एवं पालित दोनों पद्धतियों से रेशम उत्पादन का कार्य होता है भारत में पाई जाने वाली चार प्रकार के रेशम प्रजातियों में से छत्तीगढ़ में तीन प्रकार की रेशम प्रजातियाँ टसर, मलवरी, ईरी के उत्पादन का गौरव हासिल है। छत्तीसगढ़ में उपलब्ध नैसर्गिक रैली, लरिया एवं बरफ है। इसमें इसमें से **रैली कोसा बस्तर संभाग में बहुतायत में है जिसमें से 1500 से 1700 मीटर तक लम्बा धागा प्राप्त किया जाता है** प्रदेश की रेशम गतिविधियों के विकास हेतु प्रोजेक्ट एप्रोच अपनाते हुये सोइल टू सिल्क (Soil to Silk) की सम्पूर्ण गतिविधियां सम्मिलित की गई है जिसके अन्तर्गत बिलासपुर संभाग में रेशम परियोजना एवं बस्तर इनोवंटिव प्रोजेक्ट स्थापित किये गये। टसर, मलवरी, ईरी रेशम का कृषि पालन एवं धागाकरण कार्य के माध्यम से अंशकालीन रोजगार प्रदान कर हितग्रहियों की वार्षिक आय में वृद्धि का हर संभव प्रयास शासन द्वारा किया जा रहा है वर्तमान में टसर सिल्क फिनीसिंग मटेरियल 2500 मीटर प्रति दिन एवं ड्रेस, मटेरियल एवं 8000 मीटर, साड़ियां 550 नग, 250 से 450 रू. की लागत में फिनीसिंग ड्रेस मटेरियल एवं साड़ियां 1300 से 5000 हजार नग तक की तैयार हो रही है। उत्पादित उपरोक्त टसर उत्पादन का 31% स्थानीय स्तर पर 32% राष्ट्रीय स्तर पर 65% एवं अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर विक्रय एवं निर्यात किया जा रहा है।

छततीसगढ़ का टसर रेशम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है, उच्च कोटि के रैली कोसा फल उत्पादन का कार्य बस्तर संभाग में प्राकृतिक रूप से होता है तथा धागाकरण एवं बुनाई व्यवसाय का कार्य बिलासपुर के पाँच जिलों में फैला हुआ है। इस उद्योग में 4742 ग्रामीणों के सैकड़ों स्व–सहायता समूह जुड़े है, इस कारण प्रदेश सरकार ने इसके विकास हेतु **''रेशम कौरिडोर''** विकसित करने की दिशा में कदम बढ़ाया है **''विजन 2020''** के तहत कोसा फल उत्पादन के 3.86 करोड़ रूपये के व्यापार को अगले पांच सालों में 24.36 करोड़ रूपये तक पहुचाने का लक्ष्य है हस योजना के तहत कोसाफल उत्पादन, ककून से धागा निकालने के आकर्षक तरीके का लाइव शो, असम के टी व स्पाइस गार्डन की तर्ज पर पांच गांवों में म्यूजियम और गार्डन, जो पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये होंगे।

कोसा उद्योग का विपणन प्रकिया –

छततीसगढ़ राज्य कोसा उत्पादन के क्षेत्र में भारत में झारखण्ड के बाद द्वितीय स्थान पर है परन्तु निर्मित कोसा उत्पाद एवं रेडिमेड वस्त्र के व्यापार में पीछे है यहां कोसा उत्पादको एवं संग्रहणकर्ताओं द्वारा कोसा विक्रय की शासकीय एवं अशासकीय प्रथा पूर्व से ही प्रचलित है। प्रदेश में विभिन्न प्रकार के कोसा फलों का विपणन निम्नानुसार होता है।

1. **नैसर्गिक कोसा** – विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित कोसा जैसे रैली, लरिया, वरफ, भंडारा, सुकली, बोगई आदि की विपणन व्यवस्था पूर्णतः स्थानीय व्यापारियों के कब्जे में है यदि रेशम विभाग या ट्रायफेड के क्रय करने पर व्यापारी कोसा का दर बढ़ा कर शासकीय एजेंसी का क्रय व्यवस्था से बाहर कर देते है। व्यापारियों द्वारा क्रय हेतु निर्मित निजी अंधोसंरचना काफी सुदृढ़ होती है एवं एक दुसरे पर विश्वास के आधार पर करोड़ों रूपये का कोसा प्रतिवर्ष क्रय विक्रय होता है। बड़े व्यापारियों द्वारा निचले स्तर से कोसा प्राप्त होने के बाद उन कोसा फलों को ज्यादा दर पर भागलपुर, भगैया, कटोरिया, कटक, चाम्पा, जांजगीर एवं रायगढ़ क्षेत्र में प्रसंस्करण एवं वस्त्र निर्माण हेतु विक्रय किया जाता है। राज्य में विशेषकर देवांगन समाज कोसा वस्त्र निर्माण व विक्रय का कार्य एकांकी व्यवसायी के रूप में करते हैं।
2. **पालित ड़ाबा कोसा की विपणन व्यवस्था** – प्रदेश में पालित ड़ाबा कोसा फलों के क्रय–विक्रय प्रकिया हेतु संस्थागत व्यवस्था हे। इस हेतु छत्तीसगढ़ राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड रेशम गतिविधि के अधीन विभिन्न दस जिलों में ककून बैंक कार्यरत है। ककून बैंक फील्ड स्तर पर सहकारी समितियों के माध्यम से कोसा कृषकों से शासन द्वारा निर्धारित दर पर कोसा क्रय कर भण्डारण करते है। ककून बैंक के द्वारा प्रदेश के बुनकरों को मांग के अनुसार निर्धारित दर पर कोसा विक्रय किया जाता है। आवश्यक पारदर्शिता हेतु बुनकरों की कार्ड प्रणाली अपनाई गयी है।

विपणन की प्रकिया में इंटरनेट का अनुप्रयोग –

वर्तमान में कोसा उद्योग के विपणन प्रकिया में इंटरनेट का प्रयोग बहुत कम होता है। अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर कोसा उद्योग को ख्याति प्राप्त कराने हेतु इंटरनेट एक आवश्यक उपकरण है। अब एकल व्यवसायी को अपने माल के विक्रय के लिये स्थान–स्थान जाने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि एक ही स्थान से ऑन लाइन अपने व्यापार का संचालन कर सकता है। इसमें व्यापार हेतु कच्चे माल क्रय विपणन, विक्रय उपरांत सेवा, भुगतान सेवा सभी शामिल है। उत्पादनकर्ता इंटरनेट की मदद से अपने उत्पादन की आधुनिक तकनिकों का प्रयोग कर सकता हैं। प्रतिस्पार्धातमक वस्तुओं से तुलना कर अपना उत्पादन श्रेष्ठ कर सकता है। आजकल प्रत्येक व्यवसायी अपने उत्पाद का विज्ञापन इंटरनेट की विभिन्न वेबसाइट द्वारा करते है। जिससे केता और विक्रेता की बीच मध्यस्थ नहीं होने से वस्तु की लागत कम पड़ती है। राज्य के जांजगीर, चांपा एवं बस्तर के कुछ क्षेत्र के बुनकरों द्वारा निर्मित रेशमी वस्त्र एवं साड़ियाँ कलात्मकता का अद्वितीय रूप है। जिसमें क्षेत्र विशेष की जीवन रीतियां तथा संस्कृति अभिव्यकत होती है। परन्तु इन बुनकरों द्वारा निर्मित उत्पाद को व्यापारियों द्वारा कम मुल्य पर क्रय करके, राज्य के बाहर अधिक लाभ पर विक्रय कर दिया जाता है। यदि बुनकर स्वयं संगठित होकर अपने उत्पाद का विक्रय इंटरनेट द्वारा करे तो उन्हे अधिकतम लाभ के साथ–साथ ख्याति भी प्राप्त होगी। इसके लिये उन्हे अपने उत्पाद का विज्ञापन एंव स्वरूप, गुणवत्ता विवरण इंटरनेट की विभिन्न साइट पर डालना होगा क्योकि विज्ञापन के अभाव में छोटे बुनकरों की विक्रय मात्रा सीमित होती है।

शासन द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हेण्डलूम एस्पो, प्रदर्शनी इत्यादि आयोजित किये जाते है, ये जिस स्थान या क्षेत्र, राज्य में आयोजित किये जाते है, उसके आस–पास रहने वाले लोग ही इससे लाभान्वित हो पाते है। यदि इसका विज्ञापन ऑनलाईन किया जाए तो सभी क्षेत्र के व्यक्ति इससे लाभान्वित हो सकेंगे। आज के प्रतिस्पर्धातमक युग में बाजार के बदलते स्वरूप के कारण यह अत्यावश्यक हो गया है कि कोसा उद्योग भी ई–कॉमर्स एवं ई–बैंकिंग को स्वीकार करें।

व्यापक रिपोर्ट से यह पाया गया है कि छोटे उत्पादक ऑनलाईन विपणन की सहायता से अपने प्रतिस्पर्धी की तुलना में जल्दी विकास करते है आज रेशम एवं वस्त्र सबसे मंहगी बिकने वाली उपभोक्ता वस्तु है, परन्तु उसका उत्पादक सबसे गरीब है, इसका मुख्य कारण उत्पादन से वस्त्रों के विक्रय तक कड़ी में मध्यस्थों द्वारा लिया जाने वाला अत्यधिक लाभ का प्रतिशत है। यदि कोसा उद्योग के सम्पूर्ण प्रकिया में इंटरनेट का प्रयोग किया जाए तो उत्पादकों को कच्चा माल कम मूल्य पर सुगमता से प्राप्त हो सकेगा। वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली आधुनिक तकनीको से

निर्माता अवगत हो सकेगा। उपभोक्ता की रूचि एवं फैशन के अनुसार उत्पादन कर विकय संवर्धन भी संभव होगा। अतः कोसा उद्योग में इंटरनेट आधारित विपणन किया जाए, विकय उपरांत सेवा, भुगतान सेवा का प्रयोग कर, यह उद्योग विकास एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर सकता हैं

Reference :-

1. Koshy TD Silk: Production & Export management; silk man's companion for the New Millennium 2001 APH Publishing corporation.
2. Raipuria K- Electronic commerce: Opportunities for Indian Exports, Economic & Political Weekly 2000.
3. Aziz A, Hanemappa silk industry, problem and prospectus. 1985- South Asia Books.
4. Rani GS, Sericulture in India, Guat Expections and Great Challenges Indian Silk 1988.
5. Gangopadhyay D. Sericulture Industry in India a review 2009 paper. ssrn.com
6. संचालनालय : रेशम प्रभाग का वार्षिक प्रतिवेदन रायपुर छ0ग0
7. Khan Z.M.S. and Suryanarayan N. – Tasar silk yarn & Fabric production – status and future prospects.